भारत में महिलाओं की स्थिति : विविध आयाम

© राम आशीष श्रीवास्तव
मनोज कुमार राव

❖ **Publisher :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ **Printed by :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ **Page design & Cover :**
H.P. Office (Source by Google)

❖ **Edition:** April 2022

ISBN 978-93-92584-22-0

❖ **Price : 200/ -**

All Rights Reserved, No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed. Conclusions reached and plagiarism, If any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever.Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

Scanned with CamScanner

13

महिला सशक्तिकरण में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

माधवेन्द्र तिवारी
सहायक प्राध्यापक (विधि)
राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर (छ.ग.)

अभिषेक दुबे
अतिथि व्याख्याता
राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर (छ.ग.)

महिला शक्तिकरण वर्तमान मानव समाज की एक प्रमुख आवश्यकता है क्यो कि यह सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र की जनसख्या में महिलाओं की हिस्सेदारी आधे के बराबर है अत: इनके विकास व सशक्तिकरण की अनदेखी कर समाज व राष्ट्र का विकास सम्भव नही है। भारत जैसे राष्ट्र में यह आवश्यकता और प्रभावी हो जाती है क्योंकि प्राचीन काल से ही महिलाओं के प्रति रूढ़िवादी एवं परम्परागत सोच ने महिलाओं की दशा अत्यन्त दयनीय बना दिया है सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिबन्धो के कारण महिलाये विकास प्रक्रिया में पूर्णत: सम्मलित नही हो पाती जिसके कारण उनके समग्र विकास पर प्रभाव पड़ता है और उन्हे विभिन्न स्तरों पर शोषण संघर्ष व कठिनाईयो सामना करना पड़ता है।

स्वतत्रता पश्चात् भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया गया। विधि निर्माताओं ने संविधान में उन्हे अनेक

Scanned with CamScanner

अधिकार प्रदान किया तथा अन्य विधानों के माध्यम से उन्हे समानता की स्थिति में लाने व उन्हे सशक्त बनाने का प्रयास किया महिला सशक्तिकरण में सरकार के इन प्रयासों के साथ गैर सरकारी संगठनों ने भी आपने स्तर से विस्तृत प्रयास किये है और महिलाओं को संगठित कर उनके क्षमताओं का विकास किया तथा उन्हे सशक्त बनाने हेतु नये–नये उपाय को अपना कर समाज के न्यूनतम स्तर तक महिला सशक्तिकरण प्रक्रिया को पहुंचाने का कार्य किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में महिलासशक्तिकरण की अवधारण एवं क्रियाकलापों का विश्लेषण करते हुये उसमे गैर सरकारी संगठनों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

महिला सशक्तिकरण :–

अर्थ :– महिला सशक्तिकरण से आशय एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से है जिससे महिलाओं को समग्र विकास के नये अवसर प्रदान किया जाता है, उनके शक्ति व सामर्थ्यों को संगठित कर उन्हे स्वावलम्बी बनाया जाता है। सशक्तिकरण पुन: सशक्त बनाने से सम्बन्धित कार्य है जिससे आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास की प्राप्ति सम्भव होती है। दुसरे शब्दों में वर्णन करें तो महिला सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिससे महिलाओं को उनकी शक्ति, क्षमता व सामर्थ्य का पुन: अहसास करवाया जाता है और उन्हे सशक्त – सक्षम बना कर उनको उनके जीवन के प्रति आत्मनिर्भर बनाया जाता है। ताकि वे पुर्ण स्वतंत्रता व सक्षमता से अपने जीवन लक्ष्यों को पूरा कर पूर्ण प्रभावशाली ढंग से जीवन यापन कर सकें।

महिला सशक्तिकरण महिलओं को विकास के अवसर प्रदान करता है तथा उन्हे उनके अधिकारों के प्रति जागरूक व सजग बना कर उन्हे चयन निर्णय का अधिकार प्रदान करता है ताकि महिला अपनेजीवन लक्ष्यो का निर्णय स्वंय कर सके तथा पूर्ण स्वावलम्बन से उन्हे प्राप्त करने हेतु उत्तरदायी एव निर्भर बन सके सशक्तिकरण की यह प्रक्रिया उन्हे मध्यकालीन रूढ़ीगत, परम्परागत सोच विचार व प्रतिबन्धों को तोड़ने उससे बाहर निकालने में सक्षमता प्रदान करता है

Scanned with CamScanner

और आधुनिक विश्व के साथ कदम से कदम मिला कर चलने की शक्ति प्रदान करता है। महिला सशक्तिकरण मात्र संवैधानिक या राजनैतिक अधिकारों से ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व पारिवारिक अधिकारों को प्रदान करता है एवं उसके प्रति जागरूक भी बनाता है ताकि पुरूषों के समान महिलायें भी समाज व राष्ट्र के विकास में सहभागी बन सकें तथा अपने हितों के प्रति सशक्त रह सकें।

संक्षेप में महिला सशक्तिकरण का अर्थ सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक समानता स्वतंत्रता के साथ अवसर व सुविधा की समान उपलब्धता एवं भागीदारी के साथ सुरक्षा, संरक्षण व अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं सजगता से है।

यह सशक्तिकरण लोकतंत्र कल्याणकारी राज्य एवं सामाजिक न्याय जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन है जो राष्ट्र के आधी आबादी को दशा एवं दिशा को संवारता है और विकास की प्रक्रिया में सम्मलित करवाता है और महिलाओं के सम्मान गरिमा योग्यता में सम्वर्धन कर उनके आत्मशक्ति को विकसित करता है।

महिला सशक्तिकरण के कुछ प्रमुख विशेषतायें या आधार है जिनकी सहायता से हम महिला सशक्तिकरण को सहजता से समझ सकते है इनमें

१) महिलाओं की उन्नत एवं सकारात्मक छवि, गरिमा एवं सम्मान

२) महिलाओं में आत्म–निर्भता, आत्म सम्मान व आत्म विश्वास की भावना

३) विकल्पों का चयन निर्णय लेने की स्वतंत्रता व क्षमता का विकास

४) समग्र विकास में समान भागीदारी

५) संवैधानिक व राजनैतिक आधिकारों की समझ एवं उसके प्रति जागरूकता शामिल है।

वर्तमान लोकतांत्रिक राष्ट्र व कल्याणकारी राज्यों में महिला सशक्तिकरण एक ज्वलंत विषय है। जो १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही प्रारम्भ हो चुका था। मानव इतिहास के इस समयकाल से ही नारी अस्मिता व गरिमा को पुरूषों के समान मानने व उन्हें समान

Scanned with CamScanner

बानाने की मांग उठती रही है इग्लैन्ड की मेरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने १७९३ ये अपनी प्रसिद्ध प्रस्तुक विन्डीकेशन ऑफ द राइस ऑफ वुमें मे महिला सशक्तिकरण के पक्ष में प्रथम वार विचार प्रस्तुत किय थे। १८६९ में जॉन स्टुअर्ट मिल ने भी अपने पुस्तक सब्जेक्शन ऑफ वुमेन में पुरूषों के वर्चस्व की स्वीकार्यता से अत्याचार मान्यताओं, संस्कारी रूढियों पर पष्न चिन्ह लगाते हुए सदियों से हो रहे शोषण व अस्याचारों का विरोध किया था और स्त्री – पुरूष के बीच पूर्ण समानता का समर्थप किया। इतिहास के इसी समयकाल से दुनिया भर में महिलाओं के प्रति समानता व उनके अधिकारो के प्रति जागरूकता आयी। भारत में भी महिला सशक्तिकरण के प्रयास प्राचीन कालों से ही विभिन्न विद्वानों द्वारा किया जाता रहा है भारतीय मनीशी स्वामी विवेकानन्द का यह कथन महिला सशक्तिकरण के लिए सत्य प्रतिति होता है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार के बिना दुनिया का कल्याण सम्भव नही है। विवेकानन्द जी के ये विचार महिला सशक्तिकरण के महत्व को प्रर्दशित करता है गॉधी जी ने भी महिला सशक्तिकरण के महत्वों का वर्णन करते हुए कहा है कि मानसिक क्षमता या अन्य किसी भी मायने में नारी पुरूषों से कम नही है बल्कि कइ मायनो में तो पुरूषों से श्रेष्ठ है गॉधी जी ने अपने अनेक सामाजिक – राजनैतिक कार्यक्रमों में महिलाओं को सलाह दिया कि वे अपने को पुरूषों से कम न समझे तथा अपने ऊपर अवांछित सामाजिक दवाव या प्रतिबंधों का बाहिष्कार करे, पुरूष व नारी के अधिकार समान है। यदि पुरूष देवता है तो नारी भी देवी है।

इस प्रकार महिला सशक्तिकरण महिलाओं को परम्परागत रूढ़ियों, प्रतिबन्धो, अवांछित समाजिक दबावो से मुक्त करने तथा उनके खोये हुए सम्मान गरिमा व अस्तित्व को पुनः प्राप्त करनेका मार्ग है। जिससे नारी भयमुक्त हो कर पूरी क्षमता, शक्ति वसामर्थ्य से विकास प्रक्रियामें सहभागी हो सके और आपने जीवन हेतु निर्णय करने में सक्षम हो सके महिला सशक्तिकरण महिला में सबलता स्वावलम्बन व आत्म विश्वास का प्रतीक है जो उसके समग्र विकास का साधन है

Scanned with CamScanner

महिला सशक्तिकरण का महत्व :—

मूलत: महिलासशक्तिकरण महिलाओं के आनरिक बाहय क्षमताओं के संर्वधन की एक प्रक्रिया है। जो उसमें आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास का विकास कर उसे सुक्ष्म व प्रभावशाली बनाता है जिससे महिला आपनी क्षमताओं को संगठित कर अपने को सशक्त बनाती है। और अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करनें में स्वयं को मजबुत बनाती है।

महिला सशक्तिकरण के महत्व की विवेचना हम कुछ प्रमुख बिन्दुओं के आधार पर प्रस्तुत कर सकते है—

(१) महिला सशक्तिकरण महिलाओं के अपने ऊपर प्राचीन व मध्यकालीन प्रतिबंन्धों, अपनी असामान्य सामाजिक स्तर परम्परा प्रथा रूढ़ियों से मुक्त होने, अपने खोये हुए सम्मान व स्तर को पुन: प्राप्त करने का तरीका है।

(२) महिला सशक्तिकरण समाज या विश्व में व्याप्त असमानता, भेदभाव, शोषण, अत्याचार व पुरूष सत्ता के नियंत्रणों से मुक्त होकर समानता स्वतंत्रता प्राप्त कारने एवं आने गरिमा सम्मान एवं अस्तित्व की रक्षा का एक प्रमुख व प्रभावी मार्ग है ।

(३) महिला सशक्तिकरण अपनी प्रक्रिया से महिलाओं के आत्मविश्वास को जागश्त करता है उन्हे सामाजिक दबाव व पुरूषों के पराधिनता की बेड़ियो को तोड़ने व अपने को आत्मनिर्भर स्वावलम्बी बनाने की प्रक्रिया है।

(४) महिला सशक्तिकरणर से महिलाओ का अधिकतम व बहु—आयामी विकास होता है। महिलाओं को सामाजिक आर्थिक राजनैतिक व पारिवारिक क्षेत्र मे स्वतंत्रता व समानता के अधिकार प्राप्त होते है जिससे वे अपने विकास को सम्भव बनाकर पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन यापन कर सकती है।

(५) महिला सशक्तिकरण प्रक्रिया से महिला अपने विविध प्रकार के अधिकारों के प्रति सजग व जागरूक होती है और इन अधिकारों प्रयोग से अपने जीवन को संवारने का कार्य पूर्ण आत्मविश्वास से करती है।

Scanned with CamScanner

(६) महिला सशक्तिकरण महिलाओं को निर्णय लेने में समक्षम बनाता है। ऐसे निर्णय उसके जीवन आयाम से सम्बन्धित होते है जिसमें वह अपने हितों व आवश्यकताओं के अनुरूप निर्णय लेकर अपने हितों की प्रतिपूर्ति करती है।

(७) महिला सशक्तिकरण का सबसे व्यापक महत्व महिलाओं को उनकी शक्ति व क्षमता का अहसास करवाने उन्हें समग्र रूप से सशक्त व संतुलित बानाने में है। जिससे महिला पूरीक्षमता से विकास प्रक्रिया में भागीदार बनती है और अपने वैयक्तिक विकास के साथ समाज व राष्ट्र के विकास मेंभी सहयोग करती है।

(८) महिला सशक्तिकरण समानता सामाजिक न्याय तथा कल्याण कारी राज्य जैसे उच्च आदर्शों व मूल्यों के स्थापना का प्रमुख साधन है जिससे समाज व राष्ट्र का सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक विकास को भी बल मिलता है।

(९) महिला सशक्तिकरण सामाजिक बदलाव या परिवर्तन का भी एक प्रमुख साधन है जिससे सामाजिक मान्यता व परम्परा में बदलाव होता है और ऐसे सामाजिक नियम जो स्त्रियों को नियान्त्रित व प्रतिबंधित करते हो उन पर आयोग्यता लागाते हो उनमें महिला सशक्तिकरण से परिवर्तन व सुधार सम्भव होता है।

(१०) महिला सशक्तिकरण महिलाओं को अनेको सुविधाये व अवसरों को प्राप्त करने एवं उससे अपने विकास को सम्भव बनाने का अवसर देता है। सशक्तिकरण से महिलाओं में चेतना, जागरूकता आती है एव उनमें आत्मविष्वास आत्मनिर्णय की क्षमता विकसित होती है जो उनमे गुणात्मक परिवर्तन लाती है।

स्पष्ट है आज प्रत्येक राष्ट्र के विकास हेतु महिला सशक्तिकरण एक प्रमुख आवश्यकता बन गयी है। प्रत्येक राष्ट्र इसके लिए विविध स्तरों से प्रयासरत भी है ताकि राष्ट्र के आधी जनसंख्या की शक्ति व क्षमता को सशक्त बनाकर उसका उपयोग राष्ट्र के विकास

Scanned with CamScanner

को वास्तविक बनाया जा सके।

महिला सशक्तिकरण में प्रमुख अवरोध :—

महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया या क्रियाकलाप को प्रभावित करने में कुछ अवरोधक सदैव प्रकट होते है जिन्हे हम निम्न रूप से वर्णित कर सकते है:—

(१) महिला सशक्तिकरण जैसी प्रक्रिया व क्रियाकलाप के सन्दर्भ में महिलाओं में ज्ञान व जागरूकता की कमी एक प्रमुख अवरोधक प्रकट होता है।

(२) महिलाओं में आत्मचेतना आत्मविश्वास की कमी भी एक अवरोध का कार्य करती है।

(३) महिला सशक्तिकरण हेतु सामूहिक संगठन व जागरूकता आवश्यक है जिसकी कमी सशक्तिकरण प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

(४) समाज में व्याप्त पुरूष सत्ता व प्रधानता, सामाजिक कुरिति व नियम सदैव सबसे बड़े अवरोधक के रूप मे प्रकट होते है।

(५) महिलाओ मे अशिक्षा, कौशल, गरीबी, बेरोजागारी, आर्थिक पराधिनता एवं अनुभवहीनता भी महिला सशक्तिकरण प्रक्रिया को प्राभक्ति करता है।

(६) महिलाओं मे आत्मसम्मान, गौरव गरीमा व अस्मिता के प्रति समझ व चेतना की कमी भी एक बड़े अवरोधक के रूप में प्रकट होती है।

(७) संविधानिक अधिकार कानूनी व राजनैतिक अधिकार के प्रति अजागरूकता या उसके व्यवहारिक प्रयोग के प्रति असमझ भी महिलाओं को प्रभावित करता है तथा उनके सशक्तिकरण को प्रभावित करता है।

(८) महिलाओं के शोषण, उत्पीडन व अत्याचार के प्रति चुप रहने उसे सहते हुये उसके प्रति अनुकूलित रहने की प्रवृत्ति भी बड़े अवरोध के रूप में प्रकट होती है।

(९) सामाजिक धार्मिक अयोग्यता, बधन व प्रतिबंध भी महिलओं

Scanned with CamScanner

के उत्थान व सशक्तिकरण को प्रभावित करता है।

(१०) आत्मनिर्भरता की कमी व निर्णय न लेने की क्षमता भी एक बड़ी बाधा है।

(११) महिलाओं को रोजगार व्यवसाय की पर्याप्त अस्वतंत्रता, आर्थिक गतिविधियों में पुरूषों का वर्चस्व महिला शसक्तिकरण प्रक्रिया में एक बड़ी बधा के रूप मे प्रकट होता है।

(१२) सरकारी योजना आर्थिक, समाजिक व राजनैतिक प्रसासों का वास्तविक स्तर पर क्रियान्वयन में असफलता व आधिकारो तथा विभिन्न नियम अधिनियम का प्रत्यक्ष लाभ न मिल पाना भी एक प्रमुख बाधा है।

स्पष्टत: महिला सशक्तिकरण के प्रायोगो में अनेक बाधा व अवरोध सदैव प्रकट होते है जो देषकाल परिस्थितियो के अनुरूप भिन्न भिन्न हो सकते है। परन्तु ऐसे अवरोध सशक्तीकरण के मार्ग में सदैव उसे विचलित व प्रभावित करने का प्रयास करते है जिसका निराकरण आवश्यक है। तकि महिलाओ को सीधे व प्रभावी ढंग से सुविधा प्रदान कर उनके सशक्तिकरण को सम्भव बनाया जा सके।

गैर सरकारी संगठन :–

गैर सरकारी संगठन मानव व समाज के विकास में केन्द्रित ऐसे संगठन है जो अपने अनोखे व आधुनिक उपायों से विकास प्रक्रिया एवं समस्या के समाधान में सहयोग प्रदान करते है। ऐसे संगठन समाज के न्यूनतम स्तर तक अपनी सेवा को पहुँचाते है और जन कल्याण हेतु निरन्तर प्रयासरत रहते है ।

गैर सरकारी संगठन मूलत: सरकारी विधानों में पंजीकृत सोसाइटी, संस्था या संगठन मानव का एक संगठित समूह है जो अपने निर्धारित उद्देश्य हेतु कार्यक्रम करते है। ऐसे संगठनों के अपने साधन व ससाधन होते है जिनका प्रयोग बिना किसी लाभ के उद्देश्यों को रखते हुए सामाज कल्याण मे करते है।

विश्व बैंक गैर सरकारी सगठनों को परिभाषित करते हुए कहता है कि गैर सरकारी संगठन एक निजी संगठन है जो लोगों का

Scanned with CamScanner

दुख—दर्द दूर करने निर्धनो के हितो का सवर्धन करने, पर्यावरण की रक्षा करने बुनियादी सामाजिक सेवाये प्रदान करने अथवा सामुदायिक विकास के लिए गतिविधियां चलाते है।

डेविड एल. सिल्स कहते है कि गैर सरकारी संगठन इसके सदस्यों के कुछेक सामान्य हितो की प्राप्ति हेतु राज्य नियंत्रण के बिना स्वैच्छिक सहायता के आधार पर संगठित व्यक्तियो का समूह है। स्पष्टत गैर सरकारी संगठन व्यक्तियो का एक संगठित समूह या संगठन है जो सरकारी नियंत्रण या हस्तक्षेप के बिना अपने निर्धारित उद्देश्यों हेतु विधानों में पंजीकृत होता है और अलाभकारी उद्देश्यो के अधार पर अपने लक्ष्य को पूरा करता है ऐसे संगठनों का लक्ष्य सामाजिक विकास व मानव कल्याण मात्र होता है। जो अपने सिमित संसाधनो से मानव के सेवा हेतु प्रबिद्ध होता है। गैर सरकारी संगठनों के स्वरूप एव विशेषताओं की गहनता से विश्लेषण करे तो इसके अर्थ को अधिक विस्तृत ढ़ग से समझ सकते है जिन्हे हम निम्न बिन्दुओ के आधार पर प्रकट कर सकते है।

(१) गैर सरकारी संगठन ऐसे मानव का समुह है जिसके सदस्य एक निश्चित उदेश्यों में विष्वास रखते है तथा सहभागी प्रयासो से निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास करते है।

(२) गैर सरकारी संगठन सरकारी नियंत्रण से मुक्त एक स्वषासी निकाय के रूप में कार्य करता है हॉलाकि इन संगठनों का पंजीकरण किसी निश्चित विधि के अंर्तगत अवश्यक होता है परन्तु ये अपने योजना निमय व कार्यक्रम बनाने के लिए स्वतंत्र होते है।

(३) गैर सरकारी संगठन सदैव अलाभकारी प्रवृति के होते है। अर्थात इनका उदेष्य लाभ कमाना या धनोपार्जन नही होता है।

(४) गैर सरकारी संगठन अपने आर्थिक स्त्रोत व संसाधन की व्यवस्था स्वयं करते है और इन्ही स्त्रोतों के माध्यम से अपने कार्यक्रमो की पूरा करते है।

(५) गैर सरकारी संगठन अपने पंजीकरण के दौरान कुछ उदेश्य निधारित करते है जिनके लिए अपने कार्यक्रमों का संचालन करते है

ऐसे उद्देश्य सेवा व कल्याण होता है जो समाज एक राष्ट्र के विकास में सहयोगी होता है ।

स्पष्ट है गैर सरकारी संगठन एक पंजीकृत स्वशासी निकाय है जो मानव कल्याण एवं विकास के लिए संगठित प्रयास करता है और पूर्ण स्वतंत्रता व सक्षमता से अपने लक्ष्यों का प्राप्त करने का प्रयास करता है।

महिला सशक्तिकरण में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका:—

जैसा की स्वैच्छिक है कि गैर सरकारी संगठन सदैव अपने स्तर से मानव एवं समाज के किास हेतु कार्य करने वाले स्वैच्छिक संगठन है ऐसे संगठन समाज की संरचना एवं विकास प्रक्रिया में व्याप्त अवरोध एवं कठिनाईयों के निवारण हेतु प्रभावी ढंग से कार्य करते है और अपने नवीन ज्ञान दृष्टिकोण व उपायों के प्रयोग से समाज में समानता न्याय और उन्नति के लिए कार्य करते है।

समाज की आधी आबादी जो विभिन्न कारणें से विकास प्रक्रिया में सहभागी नही हो पा रही है तथा अपने स्थितियों में घुट—घुट कर जीवन यापन कर रही है उन्हे उनके शक्ति का पुन: एहसास करवाने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका सदैव अग्रणह रही है। हालांकि वैधानिक व सरकारी प्रयास भी महिला सशक्तिकरण के लिए अवश्य किये जा रहे है परन्तु ऐसे प्रयास व कार्यक्रम समाज के प्रत्येक स्तर तक पहुँचाने में निष्प्रभावी सिद्ध हो जाते है। ऐसे में महिलाओं का उत्थान व उसके सशक्तिकरण के प्रयासों को जमीन स्तर तक पहुचाने व उन्हे प्रभावी तरिके से फलीभूत करने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

गैर सरकारी संगठनों का समाज एवं समुदाय से सम्बन्ध अत्यन्त प्रभावी व प्रत्यक्ष होता है ऐसे संगठन लोगों के साथ मिल जुल कर ही कार्य करते है और अपनी सेवा—सुविधा या योजना को सीधे तौर पर समाज में लागू करते है जिससे इनकी छवी व प्रतिष्ठा समाज में अत्यन्त प्रभावशाली होता है। गैर सरकरी संगठन अपने इन्ही सम्बन्धों के आधार पर समाज में महिलाओं के उत्थान व

Scanned with CamScanner

सशक्तिकरण के लिए कार्य करते है और महिलओं को असमानता अन्याय व उत्पीडन से निकालने का प्रयास करते है।

गैर सरकारी संगठन महिला सशक्तिकरण हेतु समग्र दृष्टिकोण को अपनाते है और महिलाओं से सम्बधित प्रत्येक क्षेत्र में हस्तक्षेप कर उन्हे पक्तिपाली एव सामर्थ्यवान बनाने का कार्य करते है जिसके लिए मुख्यत: सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्रों में आवश्यक सहायोग व जागरूकता प्रदान कर उन्हे आत्मनिर्भर व सशक्त बनाने का कार्य करते है। गैर सरकारी संगठनो द्वारा सशक्तिकरण के क्रियाकलापों में मुख्यत: जागरूकता व चेतना, शिक्षण प्रशिक्षण, कानूनी सहयोग, संगठन एवं सहभागीता जैसी सुविधाओं को प्रदान किया जाता है ताकि उनमें अपनी स्थिति, परिस्थिति के प्रति सजगता आये और वे स्वयं आत्मनिर्भर बनकर सकारात्मक बदलाव की ओर अग्रसर हो सके। साथ ही गैर सरकीर संगठन सामाजिक नियमों परपराओं प्रथा व रूढियों में परिवर्तन लाते है जो महिला सशक्तिकरण व कल्याण के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते है।

महिला सशक्तिकरण मे गैर सरकारी संगठनों की भूमिका का वर्णन अधिक बेहतर ढंग से करते हुए इनकी भूमिका को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर प्रस्तुत कर सकते है।

(१) समाज की समग्र संरचना में व्याप्त भेदभाव असमानता व अन्याय को समाप्त करने में गैर सरकारी संगठन समाज में निरन्तर जागरूकता व चेतनाा का प्रवाह करते है। ताकि समाज स्वयं ऐसे कुरितियों रूढियों प्रथाओं मे परिवर्तन हेतु अग्रसर हो।

(२) महिलाओं को उनकी आत्मशक्ति क्षमता व सामर्थ्य की पहचान गैर सरकारी संगठन प्रभावी ढंग से करवाते है और उनमें आत्मचेतना व आत्मविश्वास का संचार करते है।

(३) गैर सरकारी संगठन महिलाओं को उनके गरीमा सम्मान व अस्तित्व के प्रति नयी चेतना प्रदान करते है जिससे महिलाओं में परिवर्तन व सुधार के नये दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

(४) गैर सरकारी संगठन महिलाओं के उनके हितों व अधिकारो के

Scanned with CamScanner

प्रति जागरूक बनाते है और उन्हे प्राप्त अधिकारो के व्यवहारिक प्रयोग के प्रति समझ भी विकसीत करते है।

(५) गैर सरकारी संगठन महिलाओं को महिलाओ को समस्त प्रकार के शोषण उत्पीडन अयोग्यता व बंधनों से मुक्त बनाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करते है।

(६) गैर सरकारी संगठन महिलाओं को महिला सशक्तिकरण के महत्व व आवश्यकता के प्रति जागरूक बनाते है और उन्हे अपनी शक्ति को संगठित करने में सहयोग देते है

(७) महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक स्वतंत्रता व समानता प्राप्त करने तथा पुरूषों के समान स्वीकृति व मान्यता प्राप्त करने में गैर सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

(८) गैर सरकारी संगठन महिलाओं को शिक्षण प्रशिक्षण प्रदान कर उनमें कौशल व गुणों का विकास करते है जिससे महिलाओं के दशा मे गुणात्मक परिवर्तन आये और वे आत्मनिर्भर व स्वावलम्वी बन सकें।

(९) गैर सरकारी संगठन महिला सशक्तिकरण व कल्याण हेतु सभी सरकारी योजना व कार्यक्रम को समाज के न्यूनतम स्तर पर मौजुद महिला को प्राप्त करमें में सहयोग प्रदान करते है जिससे महिला उत्थान व कल्याण की सभी योजना सफल हो सके।

(१०) गैर सरकारी संगठन महिलाओं को उनके हितो के प्रति इतना सजग बनाते है कि वे स्वयं अपने जीवन विकल्पों का पहचान कर सबसे योग्यताम निर्णयों को लेने में सक्षम बन सकें।

(११) गैर सरकारी संगठन महिलाओं हेतु विभिन्न प्रकार के समुह संगठ निर्मित करते है जिसमें महिलायें परस्पर सहभागी बन के अपने सामूहिक शक्ति को संगठित करती है और अपने जीवन आयोमों में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं का निराकरण अपने सामूहिक शक्ति से सम्भव बनाती है।

(१२) गैर सरकारी संगठन महिला सशक्तिकरण के विषय पर विभिन्न प्रकार के बैठक संगोष्ठी सेमीनार जैसे अनेक कार्यक्रम

Scanned with CamScanner

आयोजित कर महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित नवीन व उपयोगी ज्ञान का प्रसार करते हैं तथा उस पर विचार विमर्श करते हैं।

(9.3) ये सरकारी संगठन महिलाओं के सामाजिक स्थिति के सम्बन्ध में सरकार को समय-समय पर जागरूक करते हैं तथा महिलाओं के हित से सम्बन्धित नवीन नीति निर्माण व कार्यक्रम बनाने के लिए सदैव आन्दोलित करते हैं जिससे सरकारें भी इन विषयों के प्रति जागरूक बनी रहती हैं।

(9.4) ये सरकारी संगठन अपने स्तर से विभिन्न प्रकार की योजनाएं संचालित करके महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक, संरक्षण व सुविधा प्रदान करते हैं तथा इन समस्त क्षेत्र में सहायक बनाकर इन विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाने का प्रयास करता है।

स्पष्ट है कि सरकारी संगठन महिलाओं के उत्थान व सशक्तिकरण में सक्रिय अपूर्ण भूमिका नहीं है एवं संगठनों की भूमिका सीमित अवश्य होती है परन्तु इनके कार्य कारक अत्यन्त प्रभावी होता है जिससे ये संगठन समाज के निचले स्तर पर मौजूद महिला के उत्थान के लिए अपनी सेवा व सुविधा को सही प्रभावी ढंग से पहुँचा पाते हैं और महिलाओं के समग्र विकास में सहभागी बन पाते हैं।

उपसंहार :-

किसी भी लोकतांत्रिक व कल्याणकारी राज्य में राष्ट्र की समग्र जनसंख्या का विकास व कल्याण अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है जिसके लिए राष्ट्र व सरकार के साथ प्रत्येक स्तर की सहभागिता अनिवार्य है। देश में जनसंख्या की आधी आबादी महिला जो विभिन्न प्रकार की असमानता, अन्याय व हिंसा का शिकार है जो अपने असन्तोषपूर्ण सामाजिक आर्थिक स्थिति को अपना जीवन का हिस्सा मान चुकी है इनके उत्थान व सशक्तिकरण के बिना लोकतांत्रिक व कल्याणकारी मूल्य व आदर्शों की स्थापना सम्भव नहीं है।

तात्कालिक महिला सशक्तिकरण के लिए राज्य व संविधान द्वारा विभिन्न प्रकार के उपाय किये गए हैं, सरकार भी विभिन्न विधान व कार्यक्रम योजना बना कर महिला सशक्तिकरण का प्रयास अनवरत

करते है परन्तु सरकार के ऐसे प्रयास महिलाओं के उत्थान मे ति प्रभावी हो जाती है या अत्यन्त धीमी गति से लक्ष्योन्मुख होती है गठन जो मानव व समाज के विकास व कल्याण हेतु निर्मित स्वैच्छिक संगठन या गैर सरकारी प्रयासों के साथ साथ अपने संगठन के माध्यम से समाज के प्रत्येक स्तर मे परिवर्तन एवं सुधार का प्रयास कर महिलाओं को उनकी दीन स्थिति से निकाल कर उन्हें सक्षम व सशक्त बनायें तथा उन्हें उनके आत्मशक्ति व आत्मविश्वास से परिचित करवा कर उन्हें स्वावलम्बी व आत्म निर्भर बनायें।

महिला सशक्तिकरण या महिला कल्याण व विकास के मार्ग मे सभी की भागीदारी आवश्यक है जिसके लिए गैर सरकारी संगठन जिन्हे कल्याण कारी या विकास संगठन भी कहा जाता है उनकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण व प्रभावी हो जाती है।

संदर्भ सूची:-

(१) चौधरी, कृष्णानन्द (२००६) महिला सशक्तीकरण सम्पूर्ण पहल, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।

(२) शर्मा, पवित्र कुमार (२०१२) महिला शक्ति एवं नारी उत्थान, रचना प्रकाशन, जयपुर।

(३) शर्मा, योगेन्द्र (२००६) महिला सशक्तीकरण : दशा और दिशा, लोकभारती प्रकाशन।

(४) शुक्ला, राजश्री (२०१६) भारत मे महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति, कुरुक्षेत्र, दिसम्बर।

(५) भट्ट, रूप राम (२०१६) महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण, योजना, सितम्बर।

(६) शर्मा, प्रज्ञा (२००४) महिला: लैंगिक असमानता एवं अपराध, अविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर।

(७) द्विवेदी, राकेश (२००५) महिला सशक्तीकरण – चुनौतियाँ एवं रणनीति, पूर्णिमा प्रकाशन भोपाल।

Scanned with CamScanner